महादेवी वर्मा की सृजनात्मकता में साहित्य और कला का अनूठा संगम

अंजलि चौधरी
शोधार्थी (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग)
कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(Deemed to be University) दयालबाग, आगरा
ईमेलः *anjalichaudhary733@gmail.com*

डॉ० सोनिका
असिस्टेंट प्रोफेसर (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग)
कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(Deemed to be University) दयालबाग, आगरा
ईमेलः *sonikasandhu@dci.ac.in*

Reference to this paper should be made as follows:

अंजलि चौधरी
डॉ. सोनिका

महादेवी वर्मा की सृजनात्मकता में साहित्य और कला का अनूठा संगम

Artistic Narration
July-Dec. 2024,
Vol. XV, No. 2
Article No. 33
pp. 200-205

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2024-vol-xv-no2

सारांश

यह शोध–पत्र महादेवी वर्मा द्वारा रचित साहित्य का कला के साथ अनोखा संगम प्रस्तुत करता है। महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं, जिन्हें साहित्य जगत में विशिष्ट ख्याति प्राप्त है। साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब माना गया है। प्रगतिशील साहित्य का लक्ष्य समाज को बेहतर बनाना होता है। हिन्दी साहित्य प्रारंभ से ही जन कल्याण की भावना को समेटे हुए है। यह युग की प्रबुद्ध जन चेतना के रूप में प्रत्येक युग और चरण में प्रवाहमान रहा है, इसलिए इसकी आवश्यकता हर समय बनी रहती है और इसीलिए इनका महत्व भी अक्षुण्ण है।

साहित्य का अन्य कलाओं से स्पष्ट संबंध है। साहित्य और कला का मानव विकास के इतिहास में अमूल्य योगदान है। साहित्य और कला अनेक प्रकार से एक साथ जुड़े हुए हैं। इस शोध पत्र में उनका यह संबंध स्पष्ट प्रदर्शित है और इसके द्वारा स्पष्ट होता है कि साहित्य के महान कार्यो ने कला के कार्यों को प्रेरित किया है और कला के महान कार्यो ने साहित्य को प्रेरित किया है। अतः साहित्य सृजन भी एक कला है। इस शोध पत्र के माध्यम से काव्य का कला से अटूट संबंध प्रकाश में लाया गया है। महादेवी वर्मा की रचनाओं से काव्य का कला से अटूट संबंध प्रदर्शित है जो मानव ह्रदय के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करती हैं।

यह शोध पत्र एक माध्यम के साथ दूसरे माध्यम का संगम प्रस्तुत करता है, जिससे स्पष्ट होता है कि जब भावधारा एक माध्यम से अभिव्यक्त होने में असमर्थ होती है तो अन्य माध्यमों को सहज ही अपना लेती है। कवि और चित्रकार का यह समन्वित रूप कलाओं के संबंध को और भी दृढ़ बना देता है जिसका एक सुंदर उदाहरण है महादेवी वर्मा के काव्य युक्त चित्र।

महादेवी वर्मा साहित्य क्षेत्र में तो प्रसिद्ध हैं ही किंतु इस तथ्य से कम ही लोग अवगत हैं कि वह एक कुशल चित्रकार भी थीं। उन्होंने अपनी काव्य पंक्तियों के लिए सौंदर्यपूर्ण चित्रों को चित्रित किया और चित्रण से पूर्ण पृष्ठभूमि पर स्वयं के हस्तलेख में काव्य पंक्तियों को लिख कर काव्य और कला का अनोखा संगम प्रस्तुत किया है। शोध पत्र का उद्देश्य यह समझना है कि साहित्य अन्य माध्यमों को सहजता से स्वयं में समाहित कर लेता है और अपना अर्थ स्पष्ट करने एवं समाज को प्रभावित करने के लिए अन्य माध्यमों के साथ संगम कर उन पर अपना अधिकतम प्रभाव डालता है।

मुख्य बिंदु

साहित्य, कला, महादेवी वर्मा, काव्ययुक्त चित्र, सृजनात्मकता, दीपशिखा।

प्रस्तावना

साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब माना गया है। साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त परिस्थितियों को परिलक्षित किया जाता रहा है। प्रगतिशील साहित्य का लक्ष्य समाज को बेहतर बनाना है। प्रगतिशीलता जीवन का नियम है और साहित्य के माध्यम से हम वर्तमान में हो रहे परिवर्तन और प्रगति को प्रदर्शित कर सकते हैं। हिन्दी साहित्य प्रारम्भ से ही जन कल्याण की भावना को समेटे हुए है। महादेवी वर्मा के साहित्य और कला के अनूठे संगम को जानने से पहले हमें साहित्य और कला के संबंध का ज्ञान होना आवश्यक है।

साहित्य और कला का संबंध प्राचीन काल से है। साहित्य और कला का मानव विकास के इतिहास में अमूल्य योगदान है। साहित्य सृजन भी एक कला है। जिस प्रकार एक कलाकार अपनी कलाकृति को सुंदर रंगो और सुंदर अंकन द्वारा सुसज्जित करता है उसी प्रकार साहित्यकार सुंदर शब्दों एवं भावों द्वारा एक उत्कृष्ट रचना का निर्माण करता है।

साहित्य और कला एक दूसरे के अभिन्न अंग के समान हैं, इन्हें हम एक दूसरे के प्रेरक भी कह सकते हैं। साहित्य के महान कार्यो ने कला के महान कार्यों को प्रेरित किया। उदाहरणार्थ– **कालिदास** द्वारा रचित **'मेघदूत'** को अपने चित्रों की प्रेरणा मानकर अनेकों चित्रकारों ने उस पर चित्रण कार्य किया। **'अभिज्ञान शाकुंतलम्'** पर भी अनेकों चित्र बनाए गए। **'गीतगोविंद'** पर चित्रों का निर्माण हुआ।

कला को एक 'कलाकार और दर्शकों के बीच संचार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।' हर कला एक बोलती हुई कहानी है। कविताओं और चित्रकला का सुंदर सामंजस्य प्राचीन काल से ही देखने को मिलता है। यदि हम प्राचीन काल से देखें तो ताड़ पत्र, भोजपत्र आदि पर बनी पांडुलिपियों में भी साहित्य एवं कला का सुंदर अंकन देखने को मिलता है। लघु चित्रों में भी चित्रों के साथ श्लोकों अथवा सूत्रों को सुंदर लेख में लिखा गया है।

आधुनिक काल में भी कविताओं के साथ सुंदर चित्रों का संयोजन कर उन्हें और अधिक आकर्षक बनाया गया है। साहित्य एवं कला का संयोजन हमारे भारत देश ही नहीं वरन् अन्य देशों में भी देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ– चीन में बने चित्रों की खाली पृष्ठभूमि को कविताओं द्वारा संयोजित किया गया।

काव्य में कवि आंतरिक सौंदर्य पर विशेष बल देता है जिससे वह अपने भाव दूसरों तक पहुंचा सके उसी प्रकार चित्रों की बात करें तो बाह्य सौंदर्य प्रकट किया जाता है। जिससे व्यक्ति आकर्षित हो और उसमें छुपे भावों को समझने के लिए आतुर हो।

जब भावधारा एक माध्यम से अभिव्यक्त होने में असमर्थ होती है तो अन्य माध्यमों को सहज ही अपना लेती है। यदि किसी गद्य के साथ सुंदर चित्रों का अंकन हो तो वह तीव्रता से ध्यान आकर्षित करने में सफल होता है और दोनों के सम्मिश्रण से भाव हृदय पर प्रभाव डालने में सफल रहते हैं।

हम चाहे शास्त्रीय ढंग से विचार करें या स्वतंत्र ढंग से काव्य एवं चित्रकला में अभिव्यक्ति का ही अंतर है। कला की आत्मा अर्थात आनन्दानुभूति तो एक ही है यदि काव्य एक बोलता हुआ चित्र है तो चित्र एक मूक काव्य। काव्य और चित्रकला का संबंध अक्षुण्ण है। वे एक दूसरे के प्रेरक और सहायक ही नहीं पूरक भी हैं।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा

हिन्दी साहित्य को अधिक से अधिक गहरा और हरा–भरा बनाने में भारत के साहित्यकारों का अहम योगदान रहा है। हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों की श्रेणी में एक नाम ऐसा भी है जिसे हम '**आधुनिक युग की मीरा**' के नाम से जानते हैं और वह हैं– **महादेवी वर्मा**। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चतुष्टय स्तंभों– **जयशंकर प्रसाद**, **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**, और **सुमित्रानंदन पंत** के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं। कभी कवि **निराला** ने उन्हें '***हिन्दी के विशाल मंदिर की सरस्वती***' कहकर संबोधित किया था जो उनकी महानता को दर्शाता है। महादेवी वर्मा हिन्दी की छायावादी कवियों की श्रृंखला में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक हैं।

महादेवी वर्मा का जन्म **26 मार्च** सन **1907** ईसवी में फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके पिता **श्री गोविंद प्रसाद वर्मा** भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता **हेमरानी देवी** थी। महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा ग्रहण की। महादेवी की काव्यानुभूति की सही समझ के लिए उनकी पारिवारिक परम्पराओं, समय, समाज और परिवेश उनके शैक्षिक संस्कारों की जानकारी काफी दूर तक सहायक हो सकती है। महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व अपने जीवन पर्यन्त तक आकर्षण रहा है। उन्होंने कला और साहित्य की आजीवन उपासना की। **11 सितंबर** सन् **1987** ईसवी में प्रयागराज में महादेवी वर्मा ने इस संसार से विदा ली।

छायावाद की प्रमुख़ स्तंभ

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा का योगदान–

महादेवी वर्मा मुख्यतः एक सुप्रसिद्ध कवयित्री के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने कई कहानियां, बाल साहित्य, रेखाचित्र भी लिखे। महादेवी का समस्त काव्य वेदनामय है। यह वेदना, लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है, इस आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी के काव्य की सूक्ष्म और विकृत भावानुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है। महादेवी वर्मा की प्रमुख काव्य कृतियां हैं–

'निहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'संध्यागीत' और 'दीपशिखा'।

भारत भारती पुरस्कार प्राप्त महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा को उनके साहित्य में उत्कृष्ट रचनाओं के लिए पद्मभूषण , ज्ञानपीठ और पद्मविभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। साहित्य सेवा के साथ–साथ महादेवी वर्मा ने समाज सुधार के लिए भी कई महत्वपूर्ण कार्य किये। उन्होंने साहित्य के माध्यम से स्त्री सशक्तिकरण और स्त्री शिक्षा जैसी अहम मुद्दों को प्रोत्साहित किया हिन्दी कवयित्रियों के बीच महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व अत्यंत ही आकर्शक और साथ ही अनुपम है। महादेवी की रचनाओं में काव्य, संगीत और चित्रकला की अपूर्ण त्रिवेणी है। महान कवि कुशल चित्रकार भी हो ऐसा अक्सर नहीं होता लेकिन महादेवी का तूलिका पर भी उतना ही अधिकार है जितना लेखनी पर ।

कला के क्षेत्र में महादेवी वर्मा का योगदान–

चित्रण कार्य करते हुए महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा साहित्य जगत की विशिष्ट ख्याति प्राप्त कवयित्री हैं परंतु इस तथ्य से कम ही लोग अवगत हैं कि वह एक कुशल चित्रकार भी थीं। उनकी चित्रकला में विशेष रुचि होने के कारण उन्होंने अपनी कई रचनाओं के लिए चित्र भी बनाए। महादेवी वर्मा के चित्रों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी लिपि और संयोजन से संबंधित है। चित्रों के साथ सुंदर काव्य पंक्तियों का अद्भुत संयोजन है। उनका मानना है कि कला और काव्य दोनों का ही लक्ष्य अखण्ड सत्य की प्राप्ति है। महादेवी की व्यक्तिगत धारणा थी कि एक चित्रकार के लिए कवि होना जितना सहज हो सकता है उतना कवि के लिए चित्रकार हो सकना नहीं इसका सबसे बड़ा कारण है की चित्रकला निरीक्षण और कल्पना तथा कविता भवातिरेक और कल्पना पर निर्भर है। चित्र और काव्य में इतना संबंध या संयोजन होने के बाद भी यह दोनों कलाएं एक दूसरे से भिन्न है क्योंकि काव्य को चित्र और चित्र को काव्य नहीं कहा जा सकता, उनके माध्यम अलग–अलग हैं। जहां काव्य पढ़कर या सुनकर रसान्वित होने के लिए है वहीं चित्र नेत्रों से देखकर रसान्वित होने के लिए हैं।

लेखन कार्य करते हुए महादेवी वर्मा

भारत भारती पुरस्कार प्राप्त महादेवी वर्मा

चित्रण कार्य करते हुए महादेवी वर्मा

दीपशिखा

महादेवी वर्मा द्वारा बनाए गए यह चित्र उनके काव्य संग्रह '**दीपशिखा**' व '**यामा**' में छपे हुए हैं। दीपशिखा में 51 कविताओं पर 51 चित्र बनाए गए हैं।

दीपशिखा में महादेवी वर्मा ने लिखा है कि– '

'***"दीपशिखा में मेरी कुछ ऐसी रचनाएं संग्रहीत हैं जिन्हें मैंने रंग, रेखा की धुंधली पृष्ठभूमि देने का प्रयास किया है।"***

प्रत्येक कविता एवं चित्र अनूठा है और प्रत्येक का अपना एक अलग भाव है। महादेवी वर्मा द्वारा निर्मित चित्रों को किसी भी प्रकार से कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों से काम सिद्ध नहीं किया जा सकता है। उनके चित्र संयोजन से उनके कुशल चित्रकार होने के लक्षण साफ प्रदर्शित होते हैं।

महादेवी वर्मा का ऐसा मानना है कि जो बात वह काव्य में व्यक्त न कर सकीं उसे उन्होंने तूलिका से प्रकट करने का प्रयास किया है। वह कहती है कि–

दीपक

मेरी रंगीन कल्पना के जो रंग शब्दों में न समाकर छलक पड़े या जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति मुझे पूर्ण रूप से संतोष न दे साकी वे ही तूलिका के आश्रित हो सके हैं।

संध्या

महादेवी वर्मा के काव्यात्मक चित्रों की विषेशताएं – एक रंग पद्धति में चित्रण

महादेवी वर्मा ने उत्कृष्ट चित्रों की रचना की, उन्होंने अपने गीतों को ही कला की भाषा में नहीं उतारा बल्कि कविताओं के द्वारा जिन गूढ़ भावों को वह सुगमता से व्यक्त न कर सकीं थीं, तूलिका के द्वारा उनको संभव बना दिया था। महादेवी वर्मा के चित्रों की विशेषता ही उनकी लिपि और संयोजन है। चित्रों के साथ काव्य पंक्तियों को इतने सुंदर ढंग से संयोजित किया गया है जो देखते ही बनता है। उन्होंने चित्रों के मध्य सुंदर पंक्तियां लिखी है जो उनके स्वयं के ही हस्तलेख में हैं। उन्होंने चित्रों के

एक रंग पद्धति में चित्रण

साथ मोतियों जैसे अक्षर पिरोकर अपने चित्रण को सौंदर्यपूर्ण बनाया है। इन चित्रों में हमें कहीं–कहीं एक रंग पद्धति देखने को मिलती है। अर्थात् जिस रंग से चित्रण कार्य किया गया है उसी रंग से लेखन कार्य किया गया है। उनके द्वारा बनाए गए चित्रों में कोमलता, लयात्मकता, भावात्मकता एवं गति प्रस्फुटित है। महादेवी वर्मा द्वारा बनाए चित्र सौंदर्य से परिपूर्ण हैं।

ओ चिर महान वर्षा

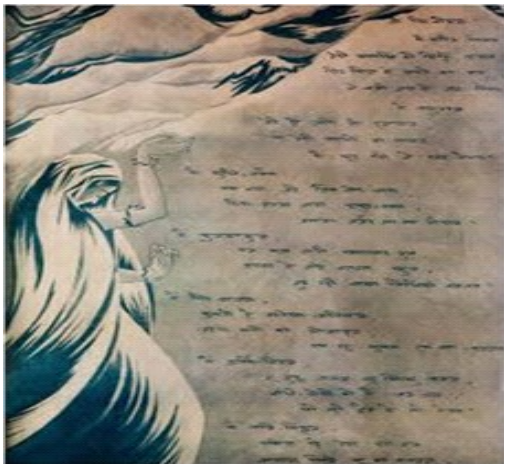

निष्कर्ष

हम यह कह सकते हैं की महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। उन्होंने कला और काव्य दोनों का ही लक्ष्य अखण्ड सत्य की प्राप्ति माना है। उन्होंने साहित्य और कला का अनूठा संगम प्रस्तुत किया है। सुंदर काव्य और कला का यह संगम भावों से परिपूर्ण है और अपना एक विशेष प्रभाव उत्पन्न करने में पूर्णतः सफल है।

सन्दर्भ

1. गुप्त, रमेशचन्द्र, (1969), महादेवी का काव्य वैभव, दिल्ली।
2. गुप्त, सुरेशचन्द्र, (1997), महादेवी की काव्य साधना, दिल्ली सतसंहिता, दिल्ली।
3. थानी, योगराज, गद्य लेखिकाः महादेवी वर्मा, भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।
4. वर्मा, महादेवी, (1942), दीपशिखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. वर्मा, महादेवी, (1940), यामा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

Internet Websites

1. https://www.jankipul.com/2013/04/blog-post_10-21.html
2. https:/0/www.mjprustudypoint.com/2022/10/mahadevi-verma-ke-rekhachitra.html
3. https://www.meraranng.in/literature/mahadevi-verma-sketches/
4. https://www.hindi-kavita.com/HindiDeepshikhaMahadeviVerma.php